

## शमशेर बहादुर सिंह की कविता में आधुनिकता और प्रयोगवाद

रमेश कुमार खैरवार

सहायक प्राध्यापक हिंदी, शासकीय लरंगसाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामानुजगंज,

जिला बलरामपुर -रामानुजगंज (छ.ग.)

### शोध-सार

हिन्दी के आकर्षक और बहुपठित कवि होने के बावजूद शमशेर एक ऐसे कवि हैं, जिन पर लिखा कमगया है, अपेक्षाकृत उनके समकालीन अन्य कवियों पर थोड़ा ज़्यादा बात हुई है। अब, ऐसा भी हो सकता है कि शमशेर की काव्यात्मक ऐन्द्रजालिकता इसका कारण रही हो। बरहहाल, हिन्दी की नयी कविता को समझने के प्रयासों में जो आलोचकीय व्यग्रताएँ काम करती हैं, वे किसी भी कवि के बारे में वातावरण और वैचारिकता जैसी चीज़ों को काफी पहले ही तय कर लेने के आग्रह से पोषित होती हैं। वहीं, शमशेर के साथ ऐसा करना थोड़ा मुश्किल काम है, उनकी कविता को पढ़ते हुए आप अपने मस्तिष्क में जैसे ही उनके कोई फ्रेम तैयार करेंगे, कविता की अगली पंक्ति उस फ्रेम का विध्वंस करती नज़र आयेगी। यदि काव्यानुभव को केन्द्र में रखें तो यह बात काफी हद तक मार्के की है, कि शमशेर को पढ़ना उनकी भाषा की नाव पर बैठ कर एक तरल यात्रा करने की तरह है। एक ऐसी यात्रा जो यह तो नहीं बताती कि हमें ठीक-ठीक कहाँ पहुँचना है, किन्तु उस यात्रा के अनुभव अतीन्द्रिय होते हैं। शमशेर को एक इम्प्रेशनिस्ट, एक प्रणयवादी, एक सामासिक, एक उत्तरछायावादी, एक ऐन्द्रजालिक या आकर्षक कवि के रूप में याद करने के साथ-साथ कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है अकेलेपन में डूबे एक ईमानदार कवि के रूप में याद करना।

**कूट-शब्द :** शमशेर बहादुर सिंह, नयी कविता, इम्प्रेशनिस्ट, छायावाद, प्रयोगवाद, आधुनिकता

### प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रयोगवाद के बाद के समय को लगभग 1950 ई. के बाद लिखी गयी कविताओं को नयी कविता का नाम दिया गया है। अधिकांश विद्वानों का मत है प्रयोगवाद के भीतर से नई कविता का जन्म माना जाता है, "दूसरा सप्तक" के प्रकाशन से ही नयी कविता की चर्चा शुरू हो जाती है। जगदीश गुप्त की "नयी कविता" पत्रिका से इसे नयी गति मिलती है। नयी कविता में नये मनुष्य की प्रतिष्ठा पर बल दिया गया है। इस मनुष्य को "लघु मानव" कहा गया और 'सहज मानव भी। नयी कविता इसी मध्यवर्गीय साधारण मनुष्य की आशा

और निराशा, आस्था और अनास्था, अकेलेपन की पीड़ा और टूट-फूट को व्यक्त करती है। नयी कविता में लोकचेतना का स्वर महत्वपूर्ण है। नयी कविता में प्रकृति, परिवार एवं आस पास की चीजों के कविता के केन्द्र में रखा गया है। यहाँ के अधिकांश कवियों की रचनाओं में लोक संवेदना की गहरी पैठ दिखलाई पड़ती है।

### उद्देश्य

- आधुनिक हिंदी साहित्य के संदर्भ में शमशेर बहादुर सिंह की काव्यगत विशिष्टता और सौंदर्य-समृद्धि का विश्लेषण करना।
- 'नई कविता' आंदोलन में अपने समकालीन कवियों की तुलना में शमशेर पर दिए गए आलोचनात्मक ध्यान की सापेक्ष कमी की पड़ताल करना।
- शमशेर की कविता की व्याख्या में निहित चुनौतियों का अन्वेषण करना-विशेष रूप से, उन पर किसी निश्चित वैचारिक या सैद्धांतिक ढाँचे को लागू करने में आने वाली कठिनाई का।
- शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में आधुनिकता के तत्वों का विश्लेषण।
- उनकी काव्य-रचनाओं में प्रयोगवाद की विशेषताओं का अध्ययन।

### शमशेर बहादुर सिंह

यदि इस अध्ययन को शमशेर की कविता पर पड़े प्रारम्भिक प्रभावों से प्रारम्भ किया जाय तो यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि शमशेर की कविता की पृष्ठभूमि में पहले उर्दू की रीतिवादी कविता और फिर निराला और पंत जैसे कवियों की कविता का प्रभाव रहा है। 'दूसरा सप्तक' के अपने वक्तव्य में वे कहते हैं

"मेरी भावनाओं पर सबसे गहरा असर पड़ा है परिमल और अनामिका का। पन्त ने भी मुझे पहले-कविता की भाषा दी। उर्दू ग़ज़लियत और उलझे हुए भावों को लिये हुए सपनों की-सी चित्रकारी और कुछ चलती हुई लयों और बातचीत के लहजों और उसके उतार-चढ़ाव को भी मैंने अपनी कविता के रूप और छन्द का आधार बनाना चाहा है।"

शमशेर के कवि पर इन प्रारम्भिक प्रभावों की थोड़ी व्याख्या आवश्यक है। घोषित तौर पर प्रयोगवादी कविता के संकलन 'दूसरा सप्तक' के कवि शमशेर प्रयोगवादी कविता के प्रतिनिधि नहीं हैं। भाषा, शिल्प और अभिव्यक्ति की दृष्टि से शमशेर की कविता में निहित छायावादी उत्तराधिकार प्रमुखता से परिलक्षित होता है। यह देखना और भी रोचक है कि जहाँ तक रीति या सौंदर्यवादिता का प्रश्न है, वे उर्दू कविता के संकेतों को अधिक पूर्णता से ग्रहण करते हैं और साथ-ही-साथ प्रदर्शित भी करते हैं। हिन्दी में छायावाद के तमाम सौंदर्य-आग्रहों के बावजूद उसे कहीं से भी मध्यकालीन कविता की नाजुकमिज़ाजी से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता है। इसके ठीक उलट उर्दू कविता में यह नाजुकमिज़ाजी एक अनिवार्य तत्त्व की तरह लम्बी अवधि (अब तक विलम्बित) तक उपस्थित रही

है। शमशेर की कविता में भी यह नाजुकमिज़ाजी दिखती है। जिस तरह उर्दू कविता में सौंदर्य की समग्रता की गहराईयों में बस कर एक प्रदीर्घ प्रभाव को ग्रहण करने की बजाय हुस्न की एक चोट पर मर जाने या बेहोश होने के प्रसंग अधिक मिलते हैं, ठीक वैसे ही शमशेर की कविता में भी समग्र सौंदर्य के प्रभाव की जगह किसी एक सौंदर्य-संकेत का प्रभाव अधिक दिखता है। यही नहीं, जिस तरह की सामासिक चमत्कार-प्रियता उर्दू कविता में विशेष मानी जाती है, उसकी ध्वनियाँ भी शमशेर की कविता में बहुतायत से मिल जाती हैं।

उसकी अधखुली अंगड़ाइयाँ हैं

कमल के लिपटे हुए दल

कसे भीनी गंध में बेहोश भौरे को

प्रभाव की बात को ही यदि आगे बढ़ाएँ तो इन प्रारम्भिक प्रभावों के बाद यूरोपीय कविता ने शमशेर को प्रभावित किया है। इन कवियों में से इलियट और एजरा पाउण्ड विशेष हैं। इन पोस्ट-रोमैन्टिक कवियों की भावुक और रहस्यमय व्यक्तिवादिता ने शमशेर की कविता पर गहरा प्रभाव डाला है। यद्यपि इस काव्यबोध में वे विषयवस्तु से सहमत नहीं हो पाते और यह कहते हैं कि 'हम तो उनके शिल्प को सराहते हैं। यहाँ एक बार फिर काव्य-चर्चा का पुराना मुद्दा 'फॉर्म' और 'टेक्स्ट' का जीवंत हो उठता है। यहाँ यह कहना आवश्यक है कि यह बात काफी हद तक सही है कि केवल शिल्प के लिए जिन कवियों ने बड़ी मेहनत की है, कई बार उनकी कविता में कुछ विशेष नज़र नहीं आता, पर शमशेर के विषय में यह अपवाद है। न केवल भाषिक संरचना बल्कि एक अनूठे शिल्प का सुन्दर उपयोग शमशेर की कविता में है, जो उन्हें कवियों का कवि बनाता है।

यहाँ, इसी बात के क्रम में शमशेर की वैचारिकता के कुछ सूत्रों को पिरोना ज़रूरी है, क्योंकि प्रभाव पर जब हम बात करते हैं, तो बिना वैचारिक प्रभाव के बात अधूरी रह जायेगी। रहस्यवाद, रोमैन्टिसिज़्म, वैयक्तिकता से होते हुए यह वैचारिक प्रभाव का क्रम मार्क्सवाद की परिधियों को स्पर्श करता है। इस मार्क्सवाद वाले बिन्दु पर आलोचकों ने प्रायः शमशेर को घेरा है। विजयदेव नारायण साही ने लिखा है "वक्तव्य उन्होंने सारे प्रगतिवाद के पक्ष में दिये, कविताएँ उन्होंने बराबर वे लिखीं जो प्रगतिवाद की कसौटी पर खरी न उतरतीं शमशेर का प्रगतिवाद उनकी कविताओं के हाशिये तक सीमित रह गया।" इसी तरह डॉ. रामविलास शर्मा ने भी उनकी रहस्यात्मकता पर बात करते हुए उन्हें अस्तित्ववाद से प्रभावित माना है।

यह भी कहा गया है कि शमशेर का काव्यलोक अज्ञेय के नितान्त सुरक्षित लोक और मुक्तिबोध के असुरक्षित लोक के बीच का लोक है और इसीलिए जहाँ एक ओर उनकी रहस्यात्मकता और वैयक्तिकता के आग्रह सीमित हैं वहीं दूसरी ओर उनकी प्रगतिशीलता के आयाम भी सीमित हैं। इस एक तथ्य को उनके आत्मसंघर्ष से भी जोड़कर देखा गया है कि शमशेर का आत्मसंघर्ष मुख्यतः काव्यबोध को लेकर है। उत्तरछायावादी काव्यबोध और प्रगतिशीलता के बीच निर्णय का प्रश्न उनकी कविता के सम्बन्ध में उठाया गया है।

### नयी कविता और लोकतात्विकता

वास्तव में नयी कविता सामाजिक आशय की कविता है। मध्यवर्गीय चेतना तथा सामान्य मनुष्य के संकल्प इसके स्वर बने। नई कविता में यथार्थ बोध सघन है। नयी कविता अनुभूतिपरकता और प्रकृति के नये संदर्भों की ओर ही नहीं, बल्कि खासतौर से प्रतीकों और बिंबों, छंद और लय और अर्थ की लय की तरफ ध्यान खींचती है। एक ओर गद्यात्मकता की प्रवृत्ति इसमें दिखती है तो दूसरी तरफ लय का संगीत सुनायी पड़ता है। इस काव्यधारा में "दूसरा सप्तक" के कवि रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता ही नहीं बल्कि तारसप्तक के कवि मुक्तिबोध, अज्ञेय, आदि के साथ "तीसरा सप्तक" के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह और "नयी कविता" पत्रिका के संपादक जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकांत वर्मा और श्रीकांत वर्मा आदि के नाम भी सम्मिलित हैं। जिसमें अधिकांश कवियों में लोक संवेदना की गहरी पैठ है।

### नयी कविता और लोक संपृक्ति

डॉ. नगेन्द्र के द्वारा संपादित "हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनुसार "लोक संपृक्ति" नयी कविता की खास विशेषता है। वह सहज लोक-जीवन के करीब पहुंचने का प्रयत्न करती है। लोक जीवन के प्रति उसकी उन्मुखता प्रगतिवाद का प्रभाव कही जा सकती है किन्तु प्रगतिवाद में एक आंदोलन का स्वर था, सहजता नहीं थी और उसने अपने विशिष्ट दृष्टिकोण के कारण लोक जीवन का एक विशिष्ट अर्थ लगा लिया था। प्रयोगवाद लोक जीवन से कट गया था। जबकि नयी कविता ने लोक जीवन की अनुभूति, सौंदर्य बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया साथ ही साथ लोक जीवन के बिम्बों प्रतीकों शब्दों और उपमानों को लोक जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्याधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया।" (1)

नयी कविता लोक जीवन के सिर्फ सतही भावनाओं का इतिवृत्त नहीं दिखलाती है बल्कि लोक जीवन में लिये गये बिम्बों के माध्यम से लोक जीवन की जटिल अनुभूतियों और प्रश्नों को ध्वनित करती है। यहाँ पर लोक जीवन से लिये गये शब्दों को ठूँसा नहीं गया है बल्कि सशक्त भाव अनुभूति और मिट्टी की सोंधी सुगंध वाले सशक्त शब्दों का प्रयोग है। नयी कविता ने सभी प्रकार के संदर्भों के लिये लोक शब्द चुने हैं। इन लोक शब्दों के माध्यम से लोक की आंतरिक चेतना को कविता में अभिव्यक्त किया गया है

"पहाड़ियों से घिरी हुई। इस छोटी सी घाटी में ये मुँह झौंसी चिमनियां बराबर। धुआं उगलती जाती हैं।

मेरा कर्म। मेरे गले का जुआं नहीं। वह जोती हुई भूमि बन जाए जिसमें मुझे नया बीज बोना है।"

इसी प्रकार मुक्तिबोध अपनी कविता "मीठा बेर" में फ्लैशलाईट अर्थात् कविता के नये सौंदर्य विधान, जो दूर स्थित देशों से मंगाई गई है। उस पर कटाक्ष करते हैं कि ये बाहरी सौंदर्य-विधान यहाँ के जन जीवन की उपेक्षा करते हैं इसलिये इनका रोब दाब यहीं पर नष्ट हो जायेगा। इसका कोई प्रभाव जनजीवन पर नहीं हो सकता। इन

कवियों के अनुभव हमारे देश के जातीय अनुभवों से संबद्ध नहीं है। हमारे सौंदर्य के लोकानुभव इसके ठीक विपरीत हैं जिसे वह "जंगली कंटीला और व्यक्ति विहीन 'मीठा बेरझाड़' के लोक प्रतीक से व्यक्त करते हैं। जो सौंदर्य का लोकविन्यास इस प्रकार से करता है-

"..... राह पर। खड़ा एक। जंगली व कंटीला, व्यक्तित्वहीन मीठा बेर झाड़ हूँ मैं। पत्थर मार-मार कर मुझे खाया गया है। मुझे तोड़ा गया है क्रूरता से। और मेरे बेरों को। बच्चों ने, राहगीरों ने, बूढ़ों ने, स्त्रियों ने। बहुत-बहुत पसंद किया है। मुझे निजत्व प्रकाशन हित । फ्लैश लाईटों व मेघों व व्योम की जरूरत ही नहीं है !! स्वयं का प्रकाशन नहीं करता। मैं तो सिर्फ फैलता हूँ बहता हूँ खून में।। क्योंकि मैं एक बेर का झाड़ हूँ। जंगली और कंटीला। किन्तु मीठा !!"

मुक्तिबोध 'बेर के बाहरी स्वरूप को 'जंगली व कंटीला' कहने के बावजूद उसके आंतरिक सौंदर्य को 'मीठा' कहते हैं। उसमें चमक-दमक नहीं है। 'बेर उत्पीड़न से भलीभांति परिचित हैं। जीवन की कठिनाइयों का भी उसका निकट का अनुभव है। जो कंटीला होने पर भी मन से साफ है। मनुष्य के रक्त में फैलता है। बेर के लोक प्रतीक माध्यम से वह फ्लैशलाईट के बाह्य प्रतीक को महत्वपूर्ण नहीं मानते है।

#### नयी कविता और लोक संस्कार

इसी प्रकार केदारनाथ सिंह की कविताओं में लोकतत्व पूरे वैभव के साथ आता है केदार अपने परंपरागत किसान संस्कार को परिष्कृत करते गये हैं जमीन से और अपनी जमीन से जुड़ी हुई चीजों से उनका प्रगाढ़ रिश्ता है। इसीलिये तमाम अमानवीय स्थितियों के बावजूद उन्हें अपनी धरती से और धरती से जुड़ी हुई सकारात्मक पक्ष को नश्वरता पर कोई संदेह नहीं है-

"मुझे विश्वास है। यह पृथ्वी रहेगी। यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में। रहते हैं दीमक। जैसे दाने में रह लेता है घुन। यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अंदर। यदि और कहीं नहीं तो मेरी जबान और मेरी नश्वरता में। यह रहेगी।"

#### निष्कर्ष

उक्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता नयी कविता से लगातार प्रभावित होती रही है। दरअसल प्रगतिवाद, प्रयोगवाद नयी कविता एक दूसरे की प्रतिक्रिया है। समय के साथ विचार और सिद्धांत के कारण वाद का नाम परिवर्तन हुआ लेकिन इन पीढ़ियों के कवि आधुनिक कविता से जुड़े हुए हैं और उसके लोकतात्विक स्वरूप को समृद्ध करने में लगे हुए हैं। अतएव यह कहा जाना उचित होगा कि आधुनिक हिन्दी कविता ने नयी कविता के लोकतात्विक प्रभाव को ग्रहण किया है और उसे अपने कविताओं में और वैभव के साथ अभिव्यक्त किया है।

## संदर्भ

01. डॉ. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास / मयूर बैक पब्लिकेशन / पृ. 633
02. अज्ञेय - अंतरा/लोकभारती प्रकाशन/पृ. 43
03. अज्ञेय बाबरा अहेरी/लोकभारती प्रकाशन/पृ. 39
04. मुक्तिबोध मीठा बेर / कविता की लोक प्रकृति/अनामिका प्रकाशन/पृ. 102
05. मुक्तिबोध - चकमक की चिंगारियों / मुक्तिबोध की कविताएँ / साहित्य अकादमी/सं. त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 97
06. केदारनाथ अग्रवाल धूप/आकृति 06 (पत्रिका) /पृ. 26
07. केदारनाथ अग्रवाल - कविता की लोक प्रकृति (सं. जीवन सिंह) / अनामिका प्रकाशन / पृ. 53
08. शमशेर बहादुर सिंह - कविता की लोक प्रकृति (सं. जीवन सिंह) / अनामिका प्रकाशन/पृ. 55
09. नागार्जुन - अपना घर / भूल जाओ पुराने सपने / पृ. 83
10. त्रिलाचन - "दिगन्त" काव्य संग्रह से संकलित / पृ. 43
11. केदारनाथ सिंह- पृथ्वी रहेगी। जनपथ 2/3/47
12. धर्मवीर भारती 'अंधायुग' से (अक्षरा-43/ जनवरी-मार्च 1999, पृ. 90
13. शमशेर बहादुर सिंह उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
14. मलयज: कविता से साक्षात्कार, संभावना प्रकाशन, हापुड, 1979
15. अजय तिवारी : समकालीन कविता और कुलीनतावाद, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
16. शमशेर बहादुर सिंह टूटी हुई बिखरी हुई, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली, 1990
15. दूधनाथ सिंह: लौट आ ओ धार, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली, 1997
16. शमशेर बहादुर सिंह काल तुझसे होड़ है मेरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988
17. नामवर सिंह: कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968

18. ज़्यादा जानकारी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
19. शमशेर बहादुर सिंह कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
20. अधिक जानकारी निक्ष, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996
21. बलदेव वंशी : आधुनिक हिन्दी कविता में विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002